अध्याय पंचम

शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय पंचम

शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावना :- विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने के साथ साथ यह जानना भी जरूरी है कि शैक्षिक प्रतिक्रियाओं में विद्यार्थियों का विकास कहाँ तक हो रहा है | इसका अध्ययन करने के लिए विद्यार्थियों का मूल्यांकन किया जाता है | शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है जो जीवन भर अनुभव के साथ साथ चलती रहती है शिक्षा में गुणवत्ता लाने एवं विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करने हेतु शिक्षा के क्षेत्र में अनेक नये-नये प्रयास किये जा रहे है |जिसके अन्तर्गत मूल्यांकन भी परीक्षा सुधर का एक अंगरमूल परिवर्तन है | जो विद्यार्थियों के शाला के पहले दिन से शुरू हो जाता है और अंतिम तक चलता रहता है |

मूल्यांकन विद्यार्थियों के विकास को बढ़ाने का एक प्रमुख बिंदु माना गया है और उसे पूरा करने के लिए विद्यालयीन शिक्षकों की अति महत्व पूर्ण भूमिका होती है |

प्रस्तुत अध्ययन द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है केन्द्रिति माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा चलाये जा रहे मूल्यांकन विधि में शिक्षकों को उनके विभिन्न विषयों में आने वाली समस्याओं का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है |

5.2 समस्या कथन :-

केन्दीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा चलाये जा रहे मूल्यांकन विधि में शिक्षकों को आने वाली समस्याओं का अध्ययन |

5.3 शोध के उद्देश्य

(i) केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा चलाये जा रहे मूल्यांकन विधि में शिक्षकों को आने वाली समस्याओं का अध्ययन |

(ii) केंद्रीय विद्यालयों में शिक्षकों को मूल्यांकन विधि में आने वाली समस्याओं का अध्ययन|

5.4 शोध प्रश्न

(i) केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा चलाये जा रहे मूल्यांकन विधि में शिक्षकों को उनके विभिन्न विषयों में क्या समस्यायें आ रही है ?

(ii) केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा चलाये जा रहे मूल्यांकन विधि में शिक्षकों को क्या समस्यायें आ रही है ?

(iii) केंद्रीय विद्यालयों के शिक्षकों को उनके विषयों में क्या समस्यायें आ रही है |

5.5 शोध की परिसीमायें:-

प्रस्तुत अध्ययन मध्य प्रदेश राज्य के भोपाल जिले तक ही सीमित है| जिसमे केन्द्रियय विद्यालय स्थान बैरागढ़ भोपाल एवं केंद्रीय विद्यालय न. 1 स्थान मैदा मिल भोपाल, इन दोनों विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के शिक्षकों को उनके विभिन्न विषयो में मूल्यांकन विधि में आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना है |

5.6 न्यादर्श का चयन :-

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने न्यादर्श का चयन सोद्देशीय न्यादर्श विधि से किया गया है इसके अंतर्गत भोपाल जिले के सी.बी.एस.ई. के अंतर्गत आने वाले दो केंद्रीय विद्यालय इनमे से 21 शिक्षकों का चयन मूल्यांकन विधि में आने वाली समस्याओं के अध्ययन के लिए किया गया है |

5.7 शोध उपकरण :- किसी भी शोध कार्य के लिए आवश्यक उपकरण का होना बहुत आवश्यक है | शोध कार्य में उपकरणों का बहुत अधिक महत्व होता है , क्योकि उपकरण के

माध्यम से ही निष्कर्षों की विश्वसनीयता आधारित होती है | उपकरण का चयन सावधानी पूर्वक किया जाना चाहिये जिससे परिणाम की विश्वसनीयता पर संदेह न किया जा सके | प्रस्तुत शोध में प्रदत्त का संग्रह करने के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली अनुसूची का उपकरण के रूप में प्रयोग किया गया है |

5.8 शोध प्राविधि :-

शोध उपकरणों के प्रशिक्षण के लिए 10दिन का समय निश्चित किया गया , शोधार्थी द्वारा 8 अप्रैल से 18 अप्रैल के दौरान सर्वेक्षण विधि से किया गया | शोधार्थी ने प्रपत्रों की पूर्ति स्वयं विद्यालय में जाकर दोनों विद्यालयों के प्रधानाचार्यों एवं उपप्रधानाचार्यों के साथ मौखिक चर्चा करने के बाद विभिन्न विषयों के शिक्षकों से व्यक्तिगत सम्पर्क द्वारा प्रत्येक शिक्षकों को प्रश्नावली अनुसूची प्रारूप दिया गया जिसके लिए भोपाल जिले के दो केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड विद्यालयों का चयन किया गया प्रदत्तों के संकलन के लिए एक समय सीमा क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान द्वारा निर्धारित की गयी | प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी ने गुणात्मक विधि का प्रयोग करते हुए शोध में दिए गए प्रदत्तों का विश्लेषण किया |

5.9 परिणाम :-

(i) मूल्यांकन विधि में ज्यादातर विद्यालयीन शिक्षकों ने उनके विभिन्न विषयों में अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा उन समस्याओं में समानता देखि गयी |

(ii) सी.बी.एस.ई. के अंतर्गत आने वाले विद्यालयों में पढ़ा रहे शिक्षकों को उनके विभिन्न विषयों में मूल्यांकन करते समय अनेक प्रकार की कठिनाइयां हुई तथा उन कठिनाइयों में भी समानता का प्रभाव दिखाई दिया |

(iii) मूल्यांकन विधि में माध्यमिक स्तर के शिक्षकों द्वारा विषयवार गुणवत्ता बढ़ाने के लिए अनेक प्रकार की मूल्यांकन विधियों का प्रयोग किया जाता है , जिसमे भी समानता देखि गयी |

5.10 सुझाव :-

- मूल्यांकन की उपयोगिता का अध्ययन |
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के शिक्षकों को उनके विभिन्न विषयों में आने वाली समस्याओं का अध्ययन |
- मूल्यांकन से विद्यालयीन शिक्षक कहाँ तक सहमत है इस तथ्य का अध्ययन |

5.11 भावी शोध हेतु सुझाव :-

- माध्यमिक स्तर के प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों के मूल्यांकन की समझ का अध्ययन किया जा सकता है |
- सी.सी.ई.नवउपक्रम से बालकों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन |
- एन. सी.ई.आर.टी. स्तर पर हो रहे सी.सी.ई.योजना कार्यक्रम का अध्ययन किया जा सकता है
- NCERT एवं CBSE के CCE का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

कोठारी कमीशन (1964-66)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) (POA1992)

अग्रवाल जे.सी.(2000) राष्ट्रीय शिक्षा नीति ,

दिल्ली , प्रभात अध्यन |

जोशी सुषमा (2007) भारत में शिक्षा प्रणाली का विकास एवं समस्यायें इलाहबाद ,

शारदा पुस्तक प्रकाशन |

कौल लोकेश (2009) शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली ,

नई दिल्ली, विकास प्रकाशन |

माध्यमिक शिक्षा और अध्यापक कार्य

शर्मा आर.के. एवं शर्मा एस. एस.

बुच.ए.बी. (1998-1992) Fifth survey of educational research (NCERT) New Delhi.

बुच.ए.बी. (1983-1988) Fifth survey of educational research (NCERT) New Delhi.

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा (2005), एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली